इस्लाम में जनसेवा

मौलाना मलिक हबीबुल्लाह क़ासिमी

अनुवाद

मुहम्मद अहमद

ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है

ऐ अल्लाह ! हमारे मालिक और हर चीज़ के मालिक, मैं गवाह हूं कि तू ही मालिक है अकेला, तेरा कोई साझीदार नहीं।

ऐ अल्लाह ! हमारे मालिक और हर चीज़ के मालिक, मैं गवाह हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं।

ऐ अल्लाह ! हमारे मालिक और हर चीज़ के मालिक, मैं गवाह हूं कि तमाम बन्दे भाई-भाई हैं। ऐ अल्लाह ! हमारे मालिक और हर चीज़ के मालिक, मुझे और मेरे घर वालों को दुनिया और आख़िरत की प्रत्येक घड़ी में बस अपना बना ले। (हदीस में आयी हुई एक दुआ)

"ऐ लोगो, जो ईमान लाये हो, (अल्लाह के आगे) झुको और सजदा करो और अपने मालिक की बन्दगी करो, और भलाई करो शायद कि तुमको सफलता प्राप्त हो।" (अल हज्ज : ७७)

मालिक अपने बन्दों को ईमान के लिए पुकारता है : 'अपने मालिक पर ईमान लाओ।' जो भले स्वभाव के होते हैं, बुद्धि से काम लेते हैं, दिल में सच की चाह होती है, आंखों से निशानियां देखते हैं, कान सच्ची आवाज़ पर लगे होते हैं, ईमान की पुकार सुनते ही उनका दिल गवाही देता है कि यह बात सत्य है और वे ईमान ले आते हैं।

मालिक ईमान वालों को अमल के लिए भी पुकारता है : ईमान वालो ! जिस मालिक पर ईमान लाये हो उसके समक्ष झुक जाओ, बिछ जाओ, बन्दा बन जाओ और बन्दों के साथ भलाई करो, उनके हक़ में भलाई ही भलाई बन जाओ। आशा रखो कामना पूरी होगी। सफल होने और कामना पूरी होने का एक ही मार्ग है : अपने सच्चे मालिक पर ईमान लाना। उसकी मर्ज़ी पूरी करना, उसके निर्देशों के

अनुसार अमल करना। अमल के मौलिक रूप से दो ही क्षेत्र हैं : मालिक के साथ व्यवहार, बन्दों के साथ व्यवहार। मालिक से बन्दगी का सम्बन्ध जोड़ना, कृतज्ञता और आभार स्वीकार करना, विनयशीलता और विनम्रता, प्रेम और रुजू के पवित्र भावों के साथ उसके सामने पूरे मन से झुक जाना, बिछ जाना, अपने पूरे अस्तित्व को डाल देना और सारे मामलों में व्यावहारतः मालिक का आज्ञापालन और बन्दगी की नीति अपनाना। बन्दों के साथ भाईचारा और मित्रता का सम्बन्ध क़ायम करना, प्रेम, सहानुभूति, शुभेच्छा, समवेदना के साथ उनकी सेवा करना। भलाई चाहना, भलाई के कार्यों में दिल से लग जाना, उसके लिए मेहनत करना, मशक़्क़त उठाना, उनके दुख-दर्द संकट और विपत्ति से दुखी होना, हाथ बटाना, उनके सुख, उन्नति, ख़ुशी और सफलता से ख़ुश होना और ख़ुशी में शामिल भी होना। और इन सारे कार्यों का वास्तविक प्रेरक और मूल उद्देश्य केवल यह हो कि हमारा मालिक हमसे और हमारे कार्यों से प्रसन्न हो जाय। हम मुसलमानों का कर्तव्य है कि बार-बार जांच करके देखें कि हमारे ईमान और अमल के बीच किस दर्जे और कहां तक अनुकूलता पायी जाती है। मालिक के विषय में हमारा क्या हाल है ? बन्दों के विषय में क्या हाल है ? इन सब में हमारा लक्ष्य क्या है ? हमारा मालिक हमें ईमान के शुद्ध अमल में पक्का और नीयत में खरा देखना चाहता है। उसकी मर्ज़ी यही है– इसी में हमारी भलाई और सफलता है।

इस जांच-पड़ताल से हमें पता चलेगा कि हम अत्यन्त शोकपूर्ण परिस्थिति से दो-चार हो चुके हैं। इसका हल केवल यही है कि अपने ईमान की चिन्ता करें, उसमें चेतना लायें और उसे जीवन्त बनायें और इसी के आधार पर अल्लाह और बन्दों के साथ अपने बिगड़े हुए मामलों

को ठीक करने और संवारने में लग जायें।

बन्दों के मामलों को ठीक करने और सुधारने में हमें सर्वप्रथम अपने हार्दिक भावों और भावनाओं पर ध्यान देना होगा। मां-बाप, बीवी-बच्चे, नातेदार, यतीम, मुहताज, पड़ोसी, सेवक, मज़दूर, मुहल्ले और बस्ती के लोग सभी हमारे प्रेम, मित्रता, शुभेच्छा और हार्दिक लगाव के पात्र हैं, लेकिन जब आदमी केवल निजी हितों को ही देखता है तो ये सारी पवित्र भावनायें निरर्थक होकर रह जाती हैं। अल्लाह ने सूरः क़सस में क़ारून को नसीहत करते हुए जो शिक्षा दी है उसका मौलिक महत्व है –

"अल्लाह ने जो कुछ तुझे दिया है उसे आख़िरत के घर की प्राप्ति का साधन बना। और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल। और लोगों के साथ अच्छा व्यवहार कर, जैसे अल्लाह ने तेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है। और धरती में बिगाड़ न पैदा कर, बिगाड़ पैदा करने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं करता।" (अल-क़सस : ७७)

निजी हितों की ओर दौड़ना और हानियों से भागना यह इंसान ही नहीं बल्कि हर जीवधारी का स्वभाव है और यह अपनी जगह नापसंदीदा भी नहीं बल्कि पसंदीदा है। इसमें अपनी सुरक्षा और विकास का रहस्य निहित है और इसी का तक़ाज़ा है कि छोटे और सामयिक फ़ायदों को बड़े और स्थाई फ़ायदों के लिए क़ुरबान किया जाय। छोटी और सामयिक हानियों को बड़ी और स्थाई हानि से बचाने के लिए छोटी और सामयिक हानि को सहन किया जाय। अब रहा यह प्रश्न कि कौन से फ़ायदे और नुक़्सान केवल छोटे और सामयिक हैं और कौन अच्छे, बड़े और स्थाई हैं। इसके लिए ज्ञान और समझ की ज़रूरत है। हमारे रब ने हमें सावधान किया है : "तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते

हो हालांकि आख़िरत बेहतर और शाश्वत है।" (क़ुरआन)

अल्लाह ने हमें हमारे स्वभाव के अनुसार पहली बुनियादी शिक्षा यह दी है कि तुम आख़िरत के घर को अपना उद्देश्य बना लो, इसलिए कि वही अच्छा और स्थाई घर है। और धरती और उसके संसाधन जो तुम्हें मेरी ओर से उपलब्ध हैं, उस पर निछावर कर दो, इसलिए कि यह आख़िरत के मुक़ाबले में तुच्छ और नश्वर है।

• प्यारे नबी सल्ल० ने एक बार सहाबा रज़ि० से पूछा कि बताओ दरिद्र कौन है ? लोगों ने बताया कि जिसके पास न धन हो न सामग्री। आपने कहा : "मेरे समुदाय का दरिद्र व्यक्ति वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े, ज़कात आदि बहुत सारी नेकियां लेकर आयेगा, लेकिन इसी के साथ बन्दों के हक़ों को मार करके आया होगा, उसने किसी को मारा, किसी को गाली दी, किसी का नाहक़ माल छीना, किसी का नाहक़ ख़ून किया, किसी पर लांछन लगाया होगा, वहां उसकी सारी नेकियां उन लोगों को दे दी जायेंगी जिन पर ज़ुल्म हुआ होगा और उनके गुनाह उसके सिर पड़ेंगे और वह औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा।"

ज्ञात हुआ कि बन्दों के समक्ष दुनिया के बजाय आख़िरत का फ़ायदा होना चाहिए। यही भले स्वभाव, सद्बुद्धि, ज्ञान और ईमान को अपेक्षित है। यदि यह परिवर्तन हमारे अंदर पैदा हो जाय, तो फ़ायदों और हितों का पारस्परिक विरोध बिल्कुल समाप्त हो जाये और उन पवित्र भावनाओं और अच्छे भावों को बल मिलना शुरू हो जाय, जो बन्दों से अपने संबन्ध ठीक करने के लिए आवश्यक हैं।

दूसरी बुनियादी शिक्षा है 'वला तन्स नसीबक मिनद्दुनूया'—'और दुनिया से अपना हिस्सा न भूल'। इसका मतलब यह है कि जब दुनिया में

आये हो और अल्लाह ने तुम्हें धन-धान्य से सम्पन्न किया है, तो इसी पर संतुष्ट न हो जाओ बल्कि तुम्हें आख़िरत की भी चिन्ता होनी चाहिए। आने वाले जीवन के लिए अगर तुमने कुछ कमाई न की, तो दुनिया से तुम अपना वास्तविक हिस्सा लेना भूल गये और भोग-विलास ही में अपना सारा समय नष्ट कर दिया। दुनिया में आदमी आया ही इसलिए है कि वह अल्लाह की बन्दगी और जनसेवा के द्वारा अपने चरित्र को महान बनाये और इस प्रकार आख़िरत में उच्च स्थान पाने का अधिकारी हो जाय। वास्तव में यही वह अपना हिस्सा है जो दुनिया से हमें हासिल करना है। यह हिस्सा प्रत्येक व्यक्ति अल्लाह और उसके बन्दों का हक़ अदा करके हासिल कर सकता है।

तीसरी बुनियादी शिक्षा है 'व अहसिन कमा अहसनल्लाहु इलैक'–'और भलाई करो जैसाकि अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है।' हर क्षण हम अल्लाह के एहसानों में डूबे रहते हैं, चारों ओर से उसकी अनुग्रह और कृपा ने हमें ढांप रखा है, वह हम पर अत्यधिक दया और कृपा करने वाला है, वह हमारी अच्छी हालत को पसन्द करता है, वह हमारी बुरी हालत को नापसन्द करता है। इसी तरह हमें बन्दों के साथ अच्छे ढंग से पेश आने का आदेश दिया गया है । एक हदीस क़ुदसी में आता है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन कहेगा ऐ आदम के बेटे, मैं भूखा था, तूने मुझे खाना नहीं खिलाया। मैं प्यासा था, तूने पानी नहीं पिलाया। मैं बीमार था, तूने बीमारपुर्सी नहीं की। बन्दा हैरान होकर कहेगा, रब तू तो पालनहार है। अल्लाह कहेगा कि मेरा अमुक बन्दा भूखा था, प्यासा था, बीमार था, लेकिन तूने उसकी ख़बर नहीं ली।

कितना ऊंचा दर्जा है कि अल्लाह ने जिस प्रकार हमारे साथ एहसान

किया है इसको हम अपने सामने रखें और इसको कभी न भूलें। हम भी दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करें क्योंकि अल्लाह का व्यवहार हमारे साथ कितना सुन्दर है! हम बन्दों से कितना ही प्रेम करें, उनकी ग़लतियों से दरगुज़र करें, उनकी सेवा करें, भलाई से पेश आयें, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे रहें, उनकी ख़ुशी से ख़ुश हों, उनके दुःख से दुःखी हों। लेकिन फिर भी इस सर्वोच्च मानदण्ड को देखते हुए हमेशा यही एहसास बना रहे कि हम कोई सेवा न कर सके, दिल को हमेशा खटका लगा रहे कि कहीं यह हमारी तुच्छ सेवाएं रद्द न कर दी जायं और अल्लाह हम से रूठ जाय, राज़ी न हो। इस मनोदशा का नक़्शा अल्लाह ने इन शब्दों में खींचा है :

"और जो देते हैं जो कुछ कर के देते हैं (उनका) हाल यह होता है कि उनका दिल कांप रहा होता है कि उन्हें अपने रब की ओर पलट कर जाना है। वही लोग भलाइयों की ओर दौड़ते हैं और वही उसे पायेंगे।" (अल-मोमिनून : ६०)

यह खटका जिन्हें जितना अधिक होता है उतना ही वे भलाई और सेवा के कामों में आगे बढ़ते हैं, उसके लिए भाग-दौड़ करते हैं और एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश करते हैं। जनसेवा और भलाई के कामों के प्रति हमारा कितना लगाव हो ? इसे जानने के लिए यह एक मिसाल काफ़ी है। ज़िक्र आता है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० एक अंधी बुढ़िया की सेवा करने के लिए एक बार उसके घर गये उन्होंने देखा कि घर में झाड़ू दिया हुआ है और पानी भरा हुआ है हज़रत उमर रज़ि० ने उससे पूछा कि यह सारा काम कौन कर गया ? उसने कहा कि मैं अंधी हूं। मुझे पता नहीं कि कौन मेरा काम कर जाता है। हज़रत उमर रज़ि० ने यह जानने के लिए कि कौन यह काम

करता है ? बुढ़िया के घर के पास छिप कर बैठ गये। देखा कि घर से कोई साया निकल रहा है, तो उन्होंने उसे पकड़ लिया तो क्या देखते हैं कि वे हज़रत अबू बक्र रज़ि० हैं जो बुढ़िया का काम कर जाते थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा : मैं अबू बक्र रज़ि० से भलाई और जनसेवा के कामों में आगे नहीं बढ़ सकता।

चौथी बुनियादी शिक्षा यह है कि 'व ला तबूग़िल फ़साद फ़िल अर्ज़ि इन्नल्लाह ला युहिब्बुल मुफ़सिदीन'–"और धरती में बिगाड़ न पैदा कर, बिगाड़ पैदा करने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं करता।" एक मोमिन को बस इतना मालूम हो जाय कि अमुक काम हमारे रब को पसन्द नहीं है या अमुक प्रकार के लोग हमारे रब को पसन्द नहीं, तो फिर वह उससे ऐसा भागेगा जैसे कोई काला नाग आग से भागता है।

अब यदि हम चाहें कि बन्दों से हमारा व्यवहार ठीक हो जाय और वह सब कुछ हम उनके साथ व्यावहारतः करने लगें जो ईमान के अनुसार हमें करना चाहिए और इसके लिए हमारे दिल में वे पवित्र भावनाएं और भाव पैदा हो जायं जो अमल के लिए उभारती हैं। उनमें इतनी शक्ति पैदा हो जाय कि हर समय हमें सक्रिय रखें और थकान और सुस्ती की कल्पना भी न कर सकें।

हमको इन पूरी बुनियादी शिक्षाओं को निगाह में रख कर तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि लोगों के साथ हमारा सम्बन्ध अच्छा हो जाय और ईमान के अनुसार हम अपना हक़ अदा कर सकें।

हम तैयारी इस प्रकार करें–

(१) दुनिया के बजाय आख़िरत को अपना वास्तविक उद्देश्य बना लें।

(२) अल्लाह तआला को अपना मालिक समझकर केवल उसी पर दृष्टि रखें। शेष किसी से न तो हम डरें और न किसी प्रकार की आशा रखें।

(३) हम पर अल्लाह ने जो एहसान किये हैं उसको अपने लिए आदर्श मान कर बन्दों की सेवा का कार्यक्रम बनायें।

(४) हर हाल में अपने को उपद्रवी बनने से बचायें, इसीलिए कि अल्लाह को बिगाड़ नहीं पसन्द है।

यदि हम इतना कर सकें तो हमारा काम सरल हो जायेगा, और इंसानों की सेवा में जो आनन्द है वह हमारा अपना अनुभव बन सकेगा और बन्दों से हमारा मामला ठीक हो जायेगा और दिन-प्रतिदिन इसमें सुधार होता चला जायेगा।

मानव-सेवा की एक आम धारणा यह पायी जाती है कि हम व्यक्तिगत रूप से जन-सेवा का कोई कार्य करें, किसी भूखे को एक रोटी दे दें, किसी एक नंगे को उतारा हुआ पुराना कपड़ा दे दें, किसी ग़रीब लाचार के हाथ पर चार पैसे रख दें, निस्संदेह यह भी सेवा है। लेकिन केवल इतने को पर्याप्त समझना और सन्तुष्ट हो जाना किसी भी रूप से सही नहीं ठहराया जा सकता। इतना तो वे ज़ालिम भी करने पर विवश हैं, जो बन्दों का ख़ून चूसते हैं। और उनकी सूखी हड्डियों पर अपने लिए विलासिता का महल खड़ा करते हैं। आपको तो उनके सभी मामलों और समस्याओं को अपनी समस्या बनानी होगी। उनके हल के उपाय सोचने होंगे और उन उपायों को काम में लाने के लिए सामूहिक शक्ति लगानी होगी।

जब हमारी भावनाएं और मनोभाव विकार-रहित हो जायं और जनसेवा का सही दृष्टिकोण हम अपना लें तो फिर हमें सबसे पहले अपने घर

के लोगों पर ध्यान देना चाहिए। बच्चों, बच्चियों, स्त्रियों, नवयुवकों और बड़ों की भलाई किस चीज़ में है, कौन-सी चीज़ें उनके लिए हानिकर और विनाशकारी हैं ? भलाई के कामों में वे कितना हिस्सा लेते हैं, इसको और बढ़ाने के लिए कितने अवसर प्राप्त हैं , उनको उपयोग में लाने के लिए व्यवहारतः उपाय निश्चित किये जायें और उन्हें अमल में लाया जाय। हम यह देखें कि हमारे अपने घर के लोग ग़लत चीज़ों में कितनी दिलचस्पी लेते हैं और यह सोचें कि उनसे बचाव के लिए क्या कुछ किया जा सकता है ? ये सारे कार्य जहां तक संभव हो पारस्परिक सलाह से पूर्ण रूप से पारस्परिक सहयोग के द्वारा सामूहिक रूप से पूरे किये जायें, प्रयास किया जाये कि पूरा घर एक जागरूक, स्वस्थ और संगठित संगठन बन जाय। इस मोर्चे पर कुछ सफलता मिलने के बाद पड़ोसियों पर ध्यान दिया जाय और हर पहलू से उन्हें ऊंचा उठाया जाय, उनमें भी जागरूकता और व्यवस्थित जीवन का रुझान पैदा किया जाय। यह काम प्रेम, सहानुभूति, शुभेच्छा, समवेदनशीलता, हिकमत (युक्ति) और क्रमागत रूप से होगा। अकेले दौड़ नहीं लगाना है, घर और पड़ोस को साथ लेकर चलना है, इसके लिए अपार श्रम, मशक़्क़त और धैर्य की आवश्यकता होगी। तरह-तरह की कठिनाइयों और रुकावटों से भी निबटना होगा। कोई भी कल्याणकारी कार्य बिना परिश्रम के नहीं हुआ करता। फिर यही कैसे होगा, मालिक से लेना है, बन्दों को देना है, सच्चा बन्दा बनकर लेना है, स्नेही भाई बनकर देना है। क्या कुछ लें और क्या कुछ बाटें ? इसकी कोई सीमा निश्चित करना कठिन है, अपने-अपने हौसले की बात है। बहरहाल हमें पूरी तरह तय कर लेना है कि जिस विह्वल प्रेम, और आवेग के साथ हम अपने मालिक के सम्बन्ध को दृढ़ और सशक्त करेंगे, इसी प्रेम और आवेग के साथ हम

बन्दों की भी सेवा करेंगे। हमारा पूर्ण कल्याण हमारी सफलता पर निर्भर करती है। क़ुरआन में है–

"अल्लाह की बन्दगी करो, उसके साथ किसी को साझी न बनाओ, मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, नातेदारों और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और पड़ोसी नातेदार से, अपरिचित पड़ोसी से, पहलू के साथी और मुसाफ़िर से, और उन दास-दासियों से जो तुम्हारे अधिकार में हों, अच्छे व्यवहार का मामला रखो, विश्वास रहे अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डींगें मारने वाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे। और ऐसे लोग भी अल्लाह को प्रिय नहीं हैं, जो कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी पर उभारते हैं और जो कुछ अल्लाह ने अपने उदारदान के अन्तर्गत उन्हें दिया है उसे छुपाते हैं। ऐसे अकृतज्ञ लोगों के लिए हमने अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।" (अन-निसा : ३६-३७)

बन्दगी और भलाई–दो कार्यों पर रब ने हम सभी बन्दों को नियुक्त किया है। बन्दगी केवल रब की, और भलाइ बन्दों के साथ : ये दोनों चीज़ें समान रूप से आवश्यक हैं। दोनों में बहुत गहरा और घनिष्ट सम्बन्ध है जो सही अर्थ में बन्दगी को अपना लेगा, वही बन्दों का सच्चा सेवक भी सिद्ध होगा। जो इतराने और डींगें मारने वाला बन्दगी से इनकार करेगा, वही बन्दों की सेवा नहीं करेगा, दूसरों को भी यही सिखायेगा और मालिक की दी हुई दौलत को छुपायेगा और बन्दों को इससे वंचित रखेगा। ऐसे लोग अल्लाह को अप्रिय हैं, उनके लिए अल्लाह ने अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

बन्दों के साथ भलाई के संक्षिप्त निर्देश पर बस न करते हुए मालिक ने ज़रूरतमंद बन्दों की एक ऐसी सूची प्रदान की है जिसमें बिना किसी

भेद-भाव के सभी आ जाते हैं। मां-बाप, दूर और निकट के सारे नाते-रिश्तेदार, यतीम, विधवा, मोहताज, असहाय, निकट के पड़ोसी, दूर के पड़ोसी, साथ हो जाने वाले पड़ोसी, राह के यात्री, मातहत, नौकर-चाकर, मेहनतकश, मज़दूर– इन सब के साथ भलाई करना संभव नहीं है जब तक कि उनके लिए हृदय में स्थान न हो, प्रेम, हमदर्दी, शुभ-चिन्तना, समवेदना और तड़प की पवित्र भावनाएं न हों। विभिन्न प्रकार के पक्षपात इन पवित्र भावनाओं को दबा देते हैं। यही नहीं बल्कि इनके विपरीत शत्रुता, निर्ममता, दुर्भावना, क्रूरता और वैमनस्यता की निकृष्ट भावनाएं मानव-मन को प्रदूषित कर देती हैं, जिसके फलस्वरूप बन्दों के साथ भलाई से पेश आने के बजाय बुराई से पेश आना जीवन का संस्कार बन जाता है और समाज हिंसा से भर जाता है। इसीलिए प्यारे नबी (सल्ल०) ने कहा है : "वह हमारे में से नहीं है जो मात्र पक्षपात के आधार पर लड़ाई-झगड़ा करे, वह हमारे में से नहीं जिसकी मृत्यु किसी पक्षपात और दुराग्रह पर हो।" (अबू दाऊद)

यह पक्षपात व्यक्तिगत, गिरोही, भाषाई, सामूहिक, वर्गीय, ख़ानदानी, नस्ली, रंग-सम्बन्धी, धार्मिक, कौमी, राष्ट्रीय और विभिन्न प्रकार का हो सकता है। और इन सब का समान रूप से बुरा प्रभाव पड़ता है। ये बन्दों के पारस्परिक सम्बन्धों को बिगाड़ने में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

हमें सच्चा मुसलमान बनने के लिए इन पक्षपातों और हर प्रकार के दुराग्रहों से अपने को दूर रखना होगा। यह तभी हमारे लिए सम्भव होगा जब कि मालिक से बन्दगी और आज्ञापालन का सम्बन्ध जोड़ने के साथ-साथ बन्दों से बिना किसी भेदभाव के मित्रता, प्रेम और हितैषिता का सम्बन्ध जोड़ सकें, और उनके साथ पूरी प्रसन्नता और दिलचस्पी

के साथ सेवा और भलाई के काम अंजाम दे सकें।

सेवा और भलाई की परिकल्पना हमारे मन में अपूर्ण, सामयिक और सतही होने के बजाय अत्यन्त विस्तृत, व्यापक और गंभीर होनी चाहिए। इसका मानदण्ड यह हो सकता है कि हम अपनी उन्नति और कल्याण में जहां तक जा सकते हों या जिस सीमा तक सोच सकते हों, वहां तक हमें अपने भाइयों को भी ले जाने की हम में उमंग, उत्साह, और संकल्प होना चाहिए। इसीलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने निर्देश देते हुए कहा है कि "क़सम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम में से कोई मोमिन (आस्थावान) नहीं जब तक कि ऐसा न हो कि वह अपने भाई के लिए वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

इस उच्च आदर्श को क़ायम करने में हमें जितनी सफलता प्राप्त होगी, उसी के अनुरूप हमारी योजना व्यापक और पूर्ण होगी। पहले तो हमें इसी पहलू पर पूरी तरह ध्यान देना होगा कि हम एक-दूसरे के अधिक से अधिक क़रीब हों। निःस्वार्थ सम्पर्क और भाईचारे का सम्बन्ध बड़े पैमाने पर क़ायम हो, जिनके पीछे निष्कपटता, भाईचारा, सहानुभूति, समवेदना और शुभेच्छा की भावनाएं काम कर रही हों। उनके दुख-दर्द में हाथ बंटाया जाय और ऐसे मामलों और समस्याओं को जो हम सभी की अपनी समस्याएं हैं मिल-जुल कर हल करने का रुझान हमारे अन्दर पैदा हो। फिर जनहित और कल्याण, मानव-सेवा और भलाई के कार्यों को अंजाम देने और सबकी आंखों में खटकने वाली बुराइयों को दूर करने के सिलसिले में सबसे ज़रूरी और अपेक्षाकृत आसान मामलों का चयन करना होगा। उनके इस काम की ज़रूरत और इसके महत्व से बस्ती के ज़्यादा-से -ज़्यादा लोगों को अवगत

कराना होगा। समस्याओं के हल के लिए लोगों के अन्दर सार्वजनिक मांग पैदा की जाएगी। इसके लिए उनका सहयोग प्राप्त करने और उनके साथ सहयोग करने की सूरतें पैदा की जायेंगी।

हमारी हिन्दी पुस्तकें

■ इस्लाम एक सिद्धान्त, एक आन्दोलन

लेखिका : मरियम जमीला, **अनुवादक :** कौसर यज़दानी-

"यह पुस्तक नव-मुस्लिम महिला मरयम जमीला की किताब Islam in Theory and practice का हिन्दी रूपान्तर है। इससे जहां यह मालूम होगा कि लेखिका ने अपना पैतृक धर्म क्यों छोड़ा,वहीं इससे यह भी मालूम किया जा सकता है कि इस्लाम किस प्रकार लोगों को स्वस्थ जीवन प्रदान करता है? उसकी अपनी संस्कृति और सभ्यता क्या है? समाज में औरत को उसने क्या स्थान दिया है? अठारहवीं शताब्दी से अब तक इस्लाम में जो कोशिशें हुई हैं, उनका उल्लेख भी इस पुस्तक में किया गया है। पुस्तक के अध्ययन से अनेक शंकाए दूर होंगी।"

■ खुतबात

भाषणकर्त्ता : मौलाना मौदूदी

■ **पहला भाग :** प्रभावकारी भाषणों का संग्रह। इसमें ईमान और अमल के बारे पर विचार किया है।

■ **दूसरा भाग :** इस्लाम की वास्तविकता पर इसमें प्रभावकारी तत्त्व आपको मिलेंगे।

■ **तीसरा भाग :** इसमें नमाज़ और रोज़े के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

■ **चौथा भाग :** इसमें ज़कात (दान) से सम्बन्धित बातें बताई गई हैं।

■ **पांचवां भाग :** इसमें हज्ज से सम्बन्धित बातें बताई गई हैं

■ बुनियादी बातें

लेखक : अबु सलीम मोहम्मद अब्दुल हई

सरल भाषा में इस्लामी शिक्षाओं का परिचय।

■ इस्लाम का परिचय

पुस्तक सूचि मुफ़्त मंगायें